॥ श्रीश्रीगुरु-गौराङ्गौ जयतः ॥

श्री श्री भागवत-पत्रिका

राष्ट्रभाषा हिन्दीमें श्रीश्रीरूप-रघुनाथकी वाणीकी अनुपम वाहिका

वर्ष—१७ संख्या—१-३ प्रबन्ध क्रमांक-५

नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री
श्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजको समर्पित
एवं
नित्यलीलाप्रविष्ट ॐ विष्णुपाद अष्टोत्तरशतश्री
श्रीमद्भक्तिवेदान्त नारायण गोस्वामी महाराजके
आदेश-निर्देश और प्रेरणानुसार

श्रीश्रीमद्भक्तिप्रज्ञान केशव गोस्वामी महाराजकी पत्रावली

(पत्र—१५)

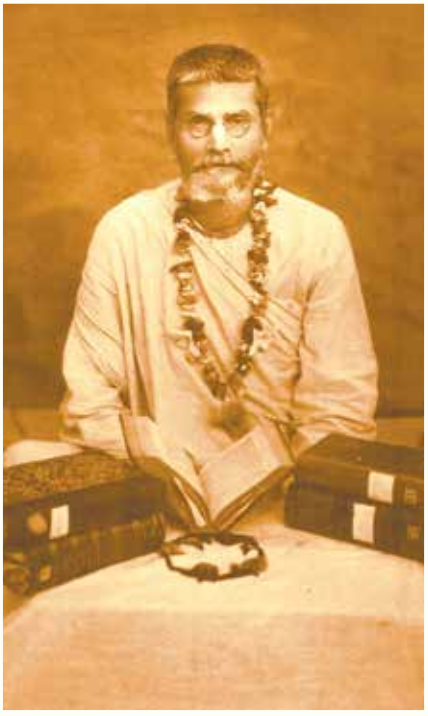

श्रीमन्महाप्रभुकी कथाओंका प्रचार ही वास्तव वदान्यता तथा जीवोंके प्रति दया है

श्रीश्रीगुरु-गौराङ्गौ जयतः

श्रीदेवानन्द गौड़ीय मठ,
तेघरिपाड़ा, नवद्वीप, नदीया।
दिनांक-२७/१२/१९६१

स्नेहभाजनेषु—

———-। २३/१२/६१ तारिखके ८० पंक्तियोंमें लिखे हुए तुम्हारे एक पोष्टकार्डको प्राप्तकर विशेष आनन्दित हुआ। तुम्हें उपाधिके लिए डेड़ वर्षके दीर्घ समयतक कालेजमें रहना

होगा। मैं भी प्रतिदिन ही तुम्हारी चिन्ता करता हूँ तथा श्रील नरोत्तम ठाकुरके एक कीर्तनका स्मरण करता हूँ। उन्होंने लिखा है—"रामचन्द्र सङ्ग मागे नरोत्तम दास।" सब विषयोंमें ईश्वरकी इच्छा ही प्रबल होती है, इसका सर्वदा ही स्मरण रखना। वे जिसका जिस प्रकारसे गठन करते हैं, वह वैसा ही गठित होता है। भगवान्‌की इच्छाके विरुद्ध जानेकी क्षमता किसीमें भी नहीं है।

जैसा भी हो, तुम अच्छे प्रकारसे पास होनेका विशेष यत्न करना। वैष्णवोंका हृदय समस्त गुणोंकी विलासभूमि है। अतः जड़ जगत्‌के समस्त गुण तथा ज्ञान-विज्ञान वैष्णवोंमें रहते हैं। जड़-विज्ञान आसुरिक होनेपर भी देवतालोग उस विषय[जड़-विज्ञान]में कम नहीं हैं। अतः तुम अच्छे अङ्कोंसे पास होकर आना।

तुम सर्वदा ही सत्यकथाके प्रचारमें व्रती रहना। सत्साहसयुक्त व्यक्तियोंकी भगवान् ही सहायता करते हैं। समस्त संसारके द्वारा असत्पथपर चलने पर भी हम उसकी दासता नहीं करेंगे। हम लोगोंने पापप्रवृत्ति या असत्कथाओंको किसी भी प्रकारसे प्रश्रय देनेके लिए जन्म ग्रहण नहीं किया है। वर्तमान विश्वविद्यालयोंकी आसुरिक शिक्षाओंको किञ्चित् भी प्रश्रय देनेके लिए हम तैयार नहीं हैं। कलिकी प्रबलतासे विश्वकी जैसी प्रगति हो रही है, उसे हमें रोकना होगा। विश्वके मङ्गलकामी व्यक्तियोंका यही एकमात्र व्रत होना चाहिए। इसीका नाम महावदान्यता है तथा इसीको ही जीवके प्रति दया कहते हैं। तुम निर्भीकरूपसे सत्यकथा कहना। सत्यका प्रचार करनेके लिए नित्यानन्द प्रभु, हरिदास ठाकुर आदि वैष्णवोंको पाषण्डियोंके प्रहार भी सहने पड़े थे। यहाँ तक कि बहुतसे महाजनोंको सत्यके प्रचारके लिए प्राण भी त्यागने पड़े थे। अतः हमें भयभीत नहीं होना है। महाप्रभुकी policy—तृणसे भी अधिक सुनीच होकर एवं वृक्षसे भी अधिक सहिष्णु होकर जीवोंके प्रति दया या प्रचार करना होगा। भगवान्‌की कथाओंका प्रचार ही जीवोंके प्रति दया है।

अधिक क्या लिखूँ? मेरा शरीर ठीक ही है। मैं आगामी ४/१/६२ को मथुरा जा रहा हूँ। इति—

श्रीगौरजनकिङ्कर

B. P. Keshab

श्रीभक्तिप्रज्ञान केशव

(श्रीगौड़ीय पत्रिका—वर्ष-४२, संख्या-२ से अनुदित)

श्रीश्रीभागवत-पत्रिकाका संग्रह — पुराने अङ्कोंको डाउनलोड किजिए।

प्रस्तुति - श्रीश्रीभागवत-पत्रिका सेवक-मण्डली